भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर -2024-25

कक्षा-10	विभाग: हिंदी	दिनांक -25.03.24
QUESTION BANK	**बड़े भाई साहब -प्रेमचंद**	Note-Write the Q & A in the Note Book.

नाम: _____ **अनुभाग:** _____ **अनुक्रमांक:** _____

1.कथा नायक की रूचि किन कार्यों में थी?

कथा नायक की रूचि मैदान में कंकरियाँ उछालने, कागज़ की तितलियाँ उड़ाने, चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूदने, फाटक पर सवार होकर उसे मोटर कार बनाकर मस्ती करने में थी l

2.दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया ?

दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई की स्वच्छंदता और मनमानी बढ़ गई। उसने ज़्यादा समय मौज-मस्ती में व्यतीत करना शुरू कर दिया । उसे लगने लगा कि वह पढ़े या न पढ़े, अच्छे नंबरों से पास हो जाएगा । उसे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया ।

3.बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे ?

बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपियों पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, बिल्लियों, कुत्तों आदि की तसवीरें बनाते थे, कभी-कभी एक ही नाम, शब्द या वाक्य को दस-बीस बार लिख डालते, कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नक़ल करते, कई बार ऐसी शब्द रचना करते जिसका कोई अर्थ नहीं होता या कोई सामंजस्य ।

4.बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

बड़े भाई साहब छोटे भाई से पाँच साल बड़े थे। वे हॉस्टल में छोटे भाई के अभिभावक के रूप में थे । उन्हें भी खेलने, पतंग उड़ाने और तमाशे देखने का शौक था, लेकिन अगर वे ठीक रास्ते पर नहीं चलेंगे तो छोटे भाई की रक्षा और देख-रेख नहीं कर सकेंगे । छोटे भाई के भविष्य की चिंता और कर्तव्य के कारण उन्हें अपने मन की इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं।

5.छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

बड़े भाई द्वारा बुरी तरह लताड़े जाने पर छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबल बना डाला। उसने सोचा कि अब वह खूब जी लगाकर पढ़ाई करेगा और खेल-कूद की ओर ध्यान नहीं लगाएगा। सुबह छह बजे से साढ़े नौ तक पढ़ाई, फिर स्कूल, स्कूल से वापस आकर आधा घंटा आराम और फिर रात ग्यारह बजे तक पढ़ाई । टाइम-टेबल में खेल-कूद के लिए कोई स्थान नहीं था । लेकिन पहले दिन ही टाइम-टेबल की अवहेलना शुरू हो जाती। उसे खेल-कूद की याद सताने

लगी । वह मैदान की सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके तथा फुटबाल, वॉलीबॉल और कबड्डी आदि खेलों के आनंद से आकर्षित हुआ और पूरी तरह खेल-कूद में शरीक होने लगा । इस प्रकार टाइम-टेबल बनाकर भी वह उसका पालन नहीं कर पाया ।

6.बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? विचार प्रकट कीजिए-

छोटा भाई अभी अनुभवहीन था। वह अपना भला-बुरा नहीं समझ पाता था । यदि बड़े भाई साहब उसे डाँटते-फटकारते नहीं, तो जितना पढता था, उतना भी नहीं पढ़ पाता और अपना समय खेल-कूद में ही गँवा देता । उसे बड़े भाई की डाँट का डर था । इसी कारण उसे शिक्षा की अहमियत समझ में आई, विषयों की कठिनाइयों का पता चला, अनुशासन का महत्त्व समझ पाया और वह कक्षा में अव्वल आया ।

7.बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है ?क्या आप उनसे सहमत हैं ?

बड़े भाई साहब ने समूची शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि आजकल के विद्यार्थियों को जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है, उससे उनके वास्तविक जीवन का कोई लेना-देना नहीं है । यह शिक्षा अंग्रेज़ी बोलने, लिखने, पढने पर ज़ोर देती है । आए या न आए पर उस पर बल दिया जाता है । रटंत प्रणाली पर जोर दिया जाता है । अर्थ समझ में आए न आए पर रटकर बच्चा विषय में पास हो जाता है । अलजेबरा, ज्योमेट्री निरंतर अभ्यास के बाद भी गलत हो जाती है। इतिहास में बादशाहों के नाम याद रखने पड़ते हैं, यदि कुछ का कुछ लिख दिया तो सवाल का जवाब गलत कर दिया जाता है । छोटे-छोटे विषयों पर लंबे-चौड़े निबंध लिखने के लिए कहा जाता है। ऐसी शिक्षा जो लाभदायक कम और बोझ ज़्यादा हो, उचित नहीं होती है । हम उनके विचार से सहमत हैं । छात्रों को वही ज्ञान दिया जाए जो व्यावहारिक और भविष्योपयोगी हो । बालकों की क्षमता एवं आयु का ध्यान रखकर छात्रों को पढ़ाया जाए ।

8.बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ किताबें पढ़ने से नहीं बल्कि ज़िन्दगी के अनुभवों से आती है। समझ और विवेक केवल अनुभवों से ही प्राप्त किए जा सकते हैं। अधिक पढ़ा-लिखा होने से व्यक्ति विद्वान तो बन सकता है लेकिन उसमें जीवन की समझ नहीं होती। कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अनुभवी हो सकता है और सफल जीवन बिता सकता है। बड़े भाई साहब ने हेड मास्टर और अपने माता-पिता का उदाहरण देकर अनुभव का महत्त्व दर्शाया है। बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को यह कहकर समझाया कि उनके माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं थे पर उन्हें जीवन की अधिक समझ थी । हेडमास्टर साहब का उदाहरण देते हुए कहा है कि घर का इंतज़ाम करने में हेडमास्टर साहब की डिग्री बेकार हो गई। खर्च पूरा न पड़ता

था। लेकिन जब हेडमास्टर की बूढ़ी माँ ने घर का प्रबंध अपने हाथ में लिया जैसे घर में लक्ष्मी आ गई हो । अतः बड़े भाई साहब जीवन के इसी अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्व देते हैं।

9.एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

एक दिन जब छोटा भाई गुल्ली-डंडा खेलने के बाद भोजन के समय लौटा तो बड़े भाई साहब उसपर बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने उसे डाँटते-फटकारते हुए कई तरह से समझाने का प्रयास किया। बड़े भाई ने कहा कि उसे अपने पास होने का घमंड नहीं करना चाहिए। उन्होंने रावण , शैतान और शाहेरूम का उदाहरण देकर समझाया कि घमंड करने से बड़े-से-बड़े व्यक्ति का भी नाश हो जाता है। उन्होंने उसके परीक्षा में पास होने को भी केवल एक संयोग बताया। यह भी कहा कि बड़ी कक्षाओं में पढाई बहुत कठिन होगी, इसलिए उसको खेल-कूद में समय गँवाना छोड़कर पढाई में मन लगाना चाहिए।

10. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

परीक्षा में दूसरी बार भी छोटा भाई पास हो गया । वह सोचने लगा कि पढ़े या न पढ़े वह अवश्य पास हो जाएगा । एक दिन जब वह एक पतंग के पीछे दौड़ रहा था तो बड़े भाई ने उसे पकड़ लिया। उन्होंने उसे बुरी तरह फटकारा। उनके द्वारा दिए गए तर्क और उदाहरण इतने सटीक थे कि छोटा भाई हैरान रह गया। बड़े भाई साहब उसे अपने माता-पिता और हेडमास्टर साहब का उदाहरण देकर समझाते हैं कि जीवन में अनुभव की अधिक आवश्यकता है। उन्होंने यह कहा कि वे उससे पाँच साल बड़े हैं और अनुभवी हैं इसलिए उसे डाँटने-फटकारने और उसकी रक्षा करने का अधिकार उन्हें प्राप्त है। बड़े भाई साहब की ऐसी विद्वतापूर्ण बातों को सुनकर छोटे भाई के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

11. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –-

i) छोटे भाई का हितैषी – बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई का भला चाहने वाले हैं। वे निरंतर उसे अच्छाई की ओर प्रेरित करते हैं। वे चाहते हैं कि उनका छोटा भाई किसी तरह पढ़-लिख जाए। इसी कारण वे उस पर क्रोधित भी होते रहते हैं और पूरा नियंत्रण भी रखते हैं।

ii) गंभीर – बड़े भाई साहब गंभीर प्रवृत्ति के हैं। वे हर समय किताबों में खोए रहते हैं। वे अपने छोटे भाई के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते हैं इसलिए वे सदा अध्ययनशील रहते हैं।

iii) वाक् कला में निपुण – बड़े भाई साहब वाक् कला में निपुण हैं। वे अपने छोटे भाई को ऐसे-ऐसे उदाहरण देकर समझाते हैं कि वह उनके सामने नतमस्तक हो जाता है। उन्हें शब्दों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करना आता है।

iv) वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली का विरोधी – बड़े भाई साहब के अनुसार वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली किसी प्रकार से लाभदायक नहीं है। यह विद्यार्थियों को कोरा किताबी ज्ञान देती है जिसका वास्तविक जीवन में कोई लाभ नहीं होता। वे ऐसी शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए इसे दूर करने की बात कहते हैं।

v) विनीत - बड़ों के लिए उनके मन में बड़ा सम्मान था। पैसों की फिजूलखर्ची को उचित नहीं समझते थे। छोटे भाई को अकसर वे माता-पिता के पैसों को पढ़ाई के अलावा खेल-कूद में गँवाने पर डाँट लगाते थे।

अतिरिक्त प्रश्न

12. आशय स्पष्ट कीजिए:

(क) इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं है, असल चीज़ है बुद्धि का विकास।

उत्तर: बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को उपदेश देते हुए कहते हैं कि परीक्षा में पास हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात तो तब होती है जब बुद्धि का विकास होता है। यदि कोई व्यक्ति बहुत-सी परीक्षाएँ पास कर ले किंतु उसे अच्छे-बुरे में अंतर करना न आए तो उसकी पढ़ाई व्यर्थ है। पुस्तकों को पढ़कर उनके ज्ञान से अपनी बुद्धि का विकास करना ही असली शिक्षा है।

(ख) फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

उत्तर: छोटा भाई खेल-कूद, सैर-सपाटे और मटरगश्ती का बड़ा प्रेमी था। उसका बड़ा भाई इन सब बातों के लिए उसे खूब डाँटता-डपटता था। उसे घुड़कियाँ देता था, तिरस्कार करता था। परंतु फिर भी वह खेल-कूद को नहीं छोड़ पाता था। वह खेलों पर जान छिड़कता था। जिस प्रकार विभिन्न संकटों में फँसकर भी मनुष्य मोह-माया में बँधा रहता है, उसी प्रकार लेखक डाँट-फटकार सहकर भी खेल-कूद के आकर्षण से बँधा रहता था।

(ग) बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

उत्तर: किसी भी मज़बूत मकान के लिए एक मज़बूत नींव का होना आवश्यक होता है। यदि नींव कमज़ोर होगी तो उस पर बना मकान भी कमज़ोर ही होगा। नींव जितनी मज़बूत होगी, उस पर बना मकान भी उतना ही मज़बूत होगा। किसी भी मज़बूत मकान के बनने में उसकी नींव का बहुत बड़ा योगदान होता है। यहाँ बड़े भाई साहब पर व्यंग्य किया गया है क्योंकि वह एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। वह अपनी पढ़ाई की बुनियाद मज़बूत डालना चाहते थे।

(घ) आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

उत्तर: छोटा भाई पतंग लूटने के लिए आकाश की ओर देखता हुआ दौड़ा जा रहा था। उसकी आँखें आकाश में उड़ने वाली पतंग रूपी यात्री की ओर थीं । वह कटी हुई पतंग धीरे-धीरे हवा में लहराती हुई नीचे की ओर गिरने को थी । उस समय वह पतंग ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे कोई पवित्र आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से धरती पर नया जन्म लेने के लिए उतर रही हो। वह पतंग स्वर्ग से निकली आत्मा के समान बिल्कुल शांत व पवित्र लग रही थी।

(ङ) 'हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती।'

उत्तर: लेखक जब खेल-कूद कर कमरे में आता तो उसे बड़े भाई साहब का डर लगा रहता । उनकी डाँट-फटकार उसके लिए सिर पर लटकती नंगी तलवार की तरह मालूम होती। फिर भी वह खेल-कूद का तिरस्कार नहीं कर पाता था। मृत्यु एक अटल सत्य है, जिसका प्रत्येक जीव को बोध है। इसके बावजूद सभी सांसारिक मायाजाल में घिरे रहते हैं। इसी प्रकार बड़े भाई साहब की फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी लेखक खेल-कूद में रुचि रखता था।

13. शैतान का हाल क्या हो गया था और क्यों? शाहेरूम भीख माँग-माँगकर क्यों मर गया ? इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर: शैतान को स्वर्ग से नरक में धकेल दिया गया था क्योंकि उसे यह अभिमान हो गया था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। शाहेरूम भीख माँग-माँगकर इसलिए मर गया कि उसने भी एक बार अहंकार किया था । इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए। अपनी मेहनत से ही ज़िंदगी में सफलता प्राप्त होती है।

14. लेखक के मन में कौन-सी कुटिल भावना उदित हुई और क्यों?

उत्तर: लेखक के मन में कुटिल भावना उदित हुई कि यदि उसका बड़ा भाई अगले साल भी फ़ेल हो जाए तो वे दोनों एक ही कक्षा में हो जाएँगे । तब बड़ा भाई बात-बात पर उसका अपमान नहीं कर सकेगा।

15. बड़े भाई साहब अंग्रेज़ी के बारे में क्या नसीहत देते रहते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब अंग्रेज़ी के बारे में छोटे भाई को यह नसीहत देते रहते थे कि अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है। उसे पढ़ने के लिए रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है। ऐरा-गैरा नत्थू खैरा अंग्रेज़ी नहीं पढ़ सकता। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख पाते, बोलना तो दूर। अंग्रेज़ी पढ़ने-समझने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वे अपना उदाहरण भी देते हैं।

16. लेखक को बाज़ार में पतंग लूटते देखकर बड़े भाई साहब ने उसे कैसे डाँटा?

उत्तर: एक दिन जब छोटा भाई पतंग लूटने के लिए दौड़ रहा था तो बाज़ार से लौटते अपने बड़े भाई साहब से टकरा गया। बड़े भाई साहब उसे देखते ही क्रोधित हो गए। उन्होंने उसे डाँटते हुए कहा कि अब वह जिस आठवीं कक्षा में है, वह कोई छोटी कक्षा नहीं है। उसे अपनी पोज़ीशन का ख्याल रखना चाहिए। इस कक्षा को पास करके तो पहले ज़माने में लोग नायब तहसीलदार बन

जाया करते थे और आज भी अनेक आठवीं पास करने वाले लीडर और समाचार-पत्रों के संपादक हैं । अतः उसे अब इस आठवीं कक्षा में आने पर बाज़ारी लड़कों के साथ पतंग लूटते घूमना शोभा नहीं देता । उसे अब इस प्रकार नहीं घूमना चाहिए।

17. 'बड़े भाई साहब' पाठ में आदर्श स्थिति को बनाए रखने के फेर में बड़े भाई साहब का बचपना तिरोहित हो जाता है। कैसे?

<u>उत्तर</u>: प्रस्तुत पाठ में एक बड़े भाई साहब हैं, जो हैं तो छोटे ही, लेकिन घर में उनसे छोटा एक भाई और है। उससे उम्र में केवल कुछ साल बड़ा होने के कारण उनसे बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ की जाती हैं। बड़ा होने के नाते वे खुद भी यही चाहते और कोशिश करते हैं कि वे जो कुछ भी करें, वह छोटे भाई के लिए एक मिसाल का काम करे। इस आदर्श स्थिति को बनाए रखने के फेर में बड़े भाई साहब का बचपना तिरोहित हो जाता है।

18. 'बड़े भाई साहब' कहानी से आपको क्या संदेश मिलता है?

<u>उत्तर</u>: इस कहानी से हमें यह संदेश मिलता है कि

- हम पढ़ाई को सहज रूप से करें। हम उसका हौव्वा न खड़ा करें।
- हम परीक्षा के तनाव में चौबीसों घंटे किताबों में न घुसे रहें। इससे हमारी सोच-विचार की प्रक्रिया बंद हो जाती है और पढ़ाई व्यर्थ हो जाती है।
- पाठ को रटने की बजाय उसे समझने की कोशिश करें। अपनी समझ को विकसित करें।
- खेल-कूद पढ़ाई के विरोध में नहीं है। यह पढ़ाई में सहायक हो सकती है।

'बड़े भाई साहब' कहानी हमें यह प्रेरणा देती है कि हम अपनी स्थिति, शक्ति और सीमा को समझें। उसी के अनुरूप व्यवहार करें। यदि हम स्वयं अपने गिरेबान में नहीं झाँकते लेकिन औरों से उम्मीदें करते हैं, तो हम हँसी के पात्र बन जाते हैं। यदि हम स्वयं योग्य नहीं हैं, तो हम दूसरे को उपदेश देने का अधिकार भी खो बैठते हैं।

****